पाठ-15

स्पष्टवादी

- बरसाने लाल चतुर्वेदी

आइए सीखें

■ मानवीय और नैतिक गुण ■ 'र' के विभिन्न रूप ■ मुहावरे ■ विकारी अविकारी शब्द।

विद्यालय में पूज्य गुरुदेवों ने हमेशा यही शिक्षा दी कि मनुष्य को सच बोलना चाहिए, स्पष्टवादी बनना चाहिए। किसी को धोखे में रखना पाप है। ऐसा करने वाले को नरक में जाना पड़ता है। जो सही बात हो, दो टूक कह देनी चाहिए। खरा आदमी किसी से चिकनी-चुपड़ी बातें नहीं करता।

अब आप ही बताइए, जान-बूझकर कौन नरक में जाना पसंद करेगा? सच बोलना और स्पष्टवादी होना हमारी समझ में सबसे सरल लगा। सच्चाई और स्पष्टवादिता में न धन खर्च होता है न शारीरिक कष्ट होता है। अत: हमने बचपन से ही स्पष्टवादी बनने की गाँठ बाँध ली।

हमारे प्रिय मित्र मिस्टर रौनकलाल को भाषण देने का मर्ज है। राजनैतिक सम्मेलन हो, साहित्यिक गोष्ठी हो, अथवा रिक्शे वालों की हड़ताल से संबंधित सभा हो, वे भाषण देने की चेष्टा अवश्य करते हैं। उनके भाषण का हाल यह है कि आरम्भ में पाँच सौ व्यक्ति हों तो भाषण के खत्म होने तक पाँच रह जाएँ। वे क्या बोलते हैं या तो वे जानते हैं या उनका भगवान। कोई चुप होने को कहता है तो हाथापाई करने पर उतर आते हैं।

एक साहित्यकार की जयंती मनाई जा रही थी। संयोजक एक विद्यार्थी था। इस जयंती में मुख्य कार्यक्रम-कवितापाठ, संगीत-वादन तथा दो नृत्य थे। संयोजक ने रौनकलाल जी से अज्ञानतावश उस साहित्यिक व्यक्ति के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के बारे में संक्षेप में पाँच मिनट में कुछ कह देने का प्रस्ताव रखा। रौनकलाल जी जम गए। उन्होंने पहले साहित्य क्या है; इस विषय से चर्चा आरम्भ की; बाद में साहित्य का विकास। जब तक वे वीरगाथा काल तक आए, कवि गण एक-एक कर जाने लगे। संयोजक की हिम्मत नहीं पड़ रही थी कि रौनकलाल को रोकें। रौनकलाल जब तक रीतिकाल पर आए, एक-एक कर संगीतज्ञ जाने लगे। एक सज्जन ने हिम्मत करके रौनकलाल के पास चिट भिजवाई; कृपया भाषण पाँच मिनिट में समाप्त कर दें। रौनकलाल ने चिट पढ़कर उसे फाड़कर फेंक दिया। वह तो चिट देने वाला समझदार था

शिक्षण संकेत

▸ सामान्य लेख और व्यंग्य में अंतर को स्पष्ट करें ▸ व्यंग्य के महत्व को बताएँ ▸ नैतिक और मानवीय गुणों से संबंधित प्रेरक प्रसंग सुनाएँ ▸ 'र' के विभिन्न रूपों का अभ्यास कराएँ।

जो चिट देने के बाद मंच से नौ दो ग्यारह हो गया वरना उस पर वहीं हाथ पड़ जाते।

भाषण के उपरांत रौनकलाल मुझसे बोले, ''कहो भाई, मेरा भाषण कैसा रहा?'' सच्चाई और स्पष्टवादिता के चक्कर में मैंने उनसे कहा—''आप निहायत बदतमीज़ आदमी हैं, सारे उत्सव का सत्यानाश कर दिया, आपको समय का ज्ञान होना चाहिए। दूसरे, आपसे जिस विषय पर बोलने को कहा गया था, उस पर बिलकुल नहीं बोले।'' फिर क्या था, मेरी उनसे गुत्थमगुत्था हो गई। धन्यवाद है उस व्यक्ति का जिसने मुझे उनसे अलग किया। हम दोनों के कपड़े फट गए थे, रौनकलाल का चश्मा भी टूट गया था। इस चक्कर में मेरा कीमती पैन जाने कौन ले गया! मैंने उसकी कोई परवाह नहीं की।

मैं उन दिनों लाला किशोरीलाल की फर्म में नौकरी करता था। लालाजी को यह खब्त सवार थी कि वे बहुत बड़े संगीतज्ञ हैं। उनकी आवाज़ कोयल जैसी है। मुझे प्रायः अपने घर बुला ले जाते और अपना राग अलापने लगते। इधर स्पष्टवादिता का सिद्धान्त था और उधर नौकरी छूटने का डर। कुछ दिन तो मौन रहने से कार्य चलता रहा। मेरे अन्य साथी जो उसी फर्म में काम करते थे, सेठ जी की आवाज की तुलना 'लता मंगेशकर' और 'मोहम्मद रफी' की आवाज से करते थे। संयोग की बात, एक दिन मैं भी उनकी महफिल को रोशन कर रहा था। लालाजी गाना गाकर बोले, ''भाई चतुर्वेदी, तुम बहुत चुप रहते हो, कभी बताया नहीं कि मेरा गाना कैसा है?'' मैं फिर भी चुप रहा। लालाजी बिगड़कर बोले, ''तुम अपने आपको समझते क्या हो? बोलने से मुँह दुखता है क्या?'' मुझसे रहा न गया। मैंने कहा, ''लालाजी, आप मेरे बॉस (मालिक) न होकर कहीं पड़ोसी होते तो आपका मोहल्ले में रहना दूभर कर देता। आपका गाना मुझे बिलकुल पसंद नहीं आया। आप अपने इस समय को व्यापार बढ़ाने में लगाएँ तो बेहतर होगा। स्पष्टवादिता के लिए क्षमाप्रार्थी हूँ।'' यह कहना बेकार है कि लालाजी इस पर इतना बिगड़े कि मुझे तुरंत घर से बाहर जाने का आदेश दे दिया।

अनेक बार कसमें खाई कि स्पष्टवादिता से पीछा छूट जाए, किन्तु मेरी यह आदत छूटने का नाम नहीं ले रही थी। एक दिन एक मित्र नाटक दिखाने ले गए। स्वयं ही उसके लेखक और निर्देशक थे। मेरे मित्र ने ऐसी चमकीली पोशाकें अभिनेताओं को पहनाई थी कि आँखें चौंधिया जाएँ। अन्दर से वे संवाद धाराप्रवाह बोल रहे थे। मानो नाटक समानांतर चल रहा हो।

जब प्रकाश होना चाहिए तब अंधकार रहता जब अंधकार की आवश्यकता होती तो प्रकाश होता था। अभिनेता रो रहे थे, जनता हँस रही थी। किसी तरह वह नाटक समाप्त हुआ। निर्देशक मित्र मेरे गले से लग गए और बोले, ''भैया, चार महीनें से दिन-रात एक कर दिया, तब कहीं जाकर पार उतरा हूँ। यह नाटक हिन्दी रंगमंच को एक नई दिशा प्रदान करेगा।'' मैं क्या उत्तर देता? मुस्करा दिया, मित्र इतने मेहरबान निकले कि फिर उन्होंने नहीं पूछा। इस तरह मेरी प्रतिज्ञा भी रह गई और उनका मन भी।

बाहर की दुनिया में तो स्पष्टवादिता की प्रतिज्ञा निभ गई; किन्तु घर में इस प्रतिज्ञा को झक मारकर तोड़ना पड़ा। दो-एक बार स्पष्टवादिता के चक्कर में श्रीमती जी से झगड़ा होते-होते बचा। मैंने सोचा कि प्रतिज्ञा के पीछे ज्यादा पड़ूँगा तो वह दिन दूर नहीं, जब मेरी जिंदगी दूभर हो जाएगी। जैसे सुबह का भूला शाम को घर वापस आ जाता है उसी प्रकार मैं भी घर में नहीं बाहर भी 'सत्यं ब्रूयात, प्रियं च ब्रूयात (सत्य बोलें और प्रियबोले)' के सिद्धान्त को मानकर स्पष्टवादिता के चक्कर को छोड़ कटुवादी बनने से बच गया। अब भगवान की दया से मैं सबका प्रिय हूँ। ज़िन्दगी चैन से गुजर रही है। सब कवि मित्र खुश हैं, श्रीमती जी खुश हैं और बॉस भी खुश हैं। अब मैं स्पष्टवादिता का नाम भी नहीं लेता हूँ।

शब्दार्थ

स्पष्टवादी=सच बोलने वाला। **गोष्ठी**=बैठक, एक से विचार रखने वाले, लोगों का सम्मेलन। **जयंती**=जन्मदिन पर आयोजित कार्यक्रम। **खब्त**=सनक। **महफिल**=आयोजन, सभा। **धारा प्रवाह**=बिना रुके, निरन्तर।

अनुभव विस्तार

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. (क) सही जोड़ी बनाइए—

- दिन – अभिनेता
- संगीत – प्रार्थी
- क्षमा – वादन
- रंगमंच – रात

(ख) दिए गए शब्दों में से उपयुक्त शब्द चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

- मि. रौनकलाल हमेशा ..... की चेष्टा करते हैं। (भाषण देने/चुप रहने)
- अंदर से वह संवाद..... बोल रहे थे। (अटककर/धाराप्रवाह)
- किसी तरह वह नाटक .....हुआ। (आरम्भ/समाप्त)
- लालाजी गाना..... बोले। (गाकर/लिखकर)

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में दीजिए—

(क) खरा आदमी कैसी बातें नहीं करता?

(ख) साहित्यकार की जयंती पर कौन-कौन से कार्यक्रम आयोजित किए गए थे?

(ग) लालाजी, चतुर्वेदी जी की किस बात पर बिगड़ गए?

(घ) लोग सेठ जी की आवाज़ की तुलना किससे करते थे?

(ङ) किशोरीलाल कौन थे? उन्हें क्या खब्त सवार थी?

लघु उत्तरीय प्रश्न

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर तीन-से-पाँच वाक्यों में दीजिए—

(क) लेखक को सबसे सरल क्या बनना लगा और क्यों?

(ख) रौनकलाल जी को क्या मर्ज था और उसका क्या परिणाम निकला?

(ग) संयोजक विद्यार्थी ने रौनकलाल के सामने क्या प्रस्ताव रखा?

(घ) लेखक घर में स्पष्टवादी क्यों नहीं बन सका?

(ङ) लेखक कटुवादी होने से क्यों बचना चाहता था?

भाषा की बात

4. निम्नलिखित शब्दों का शुद्ध उच्चारण कीजिए—

अज्ञानतावश, स्पष्टवादिता, समानांतर, कटुवादी, रंगमंच

5. निम्नलिखित शब्दों की वर्तनी शुद्ध कीजिए—

दूनीया, नीदेशक, कवी, जींदगी

6. निम्नलिखित शब्दों का उच्चारण करते हुए हिन्दी, अंग्रेज़ी और उर्दू के शब्द छाँटकर लिखिए—

स्पष्टवादी, मिस्टर, प्रतिज्ञा, गोष्ठी, बॉस, फर्म, सम्मेलन, मेहरबान, आरम्भ, मर्ज, चिट, रोशन, पैन, महफिल

हिन्दी	उर्दू	अंग्रेजी

7. निम्नलिखित मुहावरों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए—

नौ दो ग्यारह होना, दिन-रात एक करना, पार उतारना, राग अलापना, गाँठ बाँधना

ध्यान दीजिए

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए—

जिन कार्यों से युगधर्म का निर्वाह होता हो, देश प्रगतिशील बनता हो, समाज में एकता, समता, स्नेह, प्रेम की आधारशिला खड़ी होती हो, उन सबको राष्ट्रधर्म माना गया है। हर व्यक्ति को ऐसे कार्यों में संलग्न होकर सेवाकार्य का निर्वाह और राष्ट्रधर्म का परिपालन करना चाहिए।

रेखांकित शब्द-कार्यों, निर्वाह, प्रगति, प्रेम, राष्ट्र और धर्म में 'र' वर्ण के तीन रूपों का प्रयोग किया गया है। कार्यों, निर्वाह और धर्म में 'र' (स्वरहीन) रेफ के रूप में प्रयुक्त हुआ है। इन शब्दों को पुनः पढ़िए—

नि + र् + वा + ह

का + र् + यों

ध + र् + म

उपर्युक्त शब्दों में आधे 'र्' के बाद पूर्ण व्यंजन आया है। इसलिए आधा 'र्' रेफ (र्) के रूप में लगाया गया है। अर्थात् जिस व्यंजन के पहले र् (स्वरहीन) का उच्चारण होता है वहाँ 'र्' के रेफ (र्) रूप को उस व्यंजन के ऊपर लिखा जाता है।

प्रगति, व्रत और ग्रह शब्दों में आधे वर्ण प्, व्, ग्, के बाद पूर्ण 'र' का प्रयोग हुआ है। इन्हें पुनः पढ़िए—

प् + र + ग + ति

व् + र + त

ग् + र + ह

उपर्युक्त शब्दों में प्रारंभ में आधा वर्ण है और उसके बाद पूरा 'र' का उच्चारण हो रहा है। जब आधे वर्ण के पश्चात पूर्ण 'र' का प्रयोग होता है तब 'र' का रूप (्र) वर्ण के नीचे लगता है।

राष्ट्र, ड्रम, ट्रेन और ड्रामा शब्दों में र को आधे वर्ण के नीचे (्) चिह्न के रूप में लगाया जाता है। इन शब्दों को पुनः पढ़िए—

रा + ष् + ट् + र

ड् + र + म

ट् + रे + न

क, ख, ग,घ, च, ज, प आदि खड़ी पाई वाले वर्णों को (क, ख, ग, घ, च, ज, प) आधा लिखा जा सकता है; किन्तु ट, ठ, ड जैसे वर्णों को आधा नहीं लिखा जा सकता। अतः जब 'र' वर्ण का उच्चारण इन स्वरहीन (आधे) वर्णों के पश्चात् होता है तो ट्, ठ्, ड् के नीचे 'र' वर्ण का (्) चिह्न लगा दिया जाता है।

8. **निम्नलिखित शब्दों में 'र' के विभिन्न रूपों का प्रयोग कर शुद्ध शब्द बनाइए—**

खरच्, टर्क, पिरिय, मरज, टरामगाड़ी, कार्यकर्म, पर्स्ताव, राष्ट्रपति, चर्चा, फर्म, स्वार्थी,

9. **निम्नलिखित वाक्यों में से विकारी एवं अविकारी शब्दों को रेखांकित कीजिए—**

- वह शीघ्र चला आया।
- लड़कों को बुलाओ।
- उसने खाना खाया।
- खरा आदमी किसी से चिकनी चुपड़ी बातें नहीं करता।
- अभिनेता रो रहे थे।

अब करने की बारी

- सत्यं ब्रूयात, प्रियं च ब्रूयात इस प्रकार के वाक्यों को लिखकर शाला में लगाइए।
- अन्य व्यंग्यकारों की व्यंग्य रचनाओं को खोज़कर पढ़िए।
- कोई ऐसी घटना सोचकर लिखिए जिसमें स्पष्टवादी होने पर आपको या किसी अन्य को लाभ पहुँचा हो।

❑❑